ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592575

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

कला और मनोविज्ञान का सम्बन्ध

डॉ. पूनम [1]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर व् विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग, महात्मा गाँधी विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद

शोध-सारांश
कला और कलात्मक व्यापार निष्प्रयोजन और आकस्मिक नही है। उनका जीवन से निकट सम्बन्ध है। जीवन के सुख-दुःख जैसे सुखात्मक और दुखात्मक भावों को कला ही अपने रूप रसायन के द्वारा अस्वादय बना देती है। सुखात्मक भाव तो आनन्द देते ही हैं किन्तु कलाओं की यह विशेषता है कि यहां दुखात्मक भाव - विषाद, भय, शोक जैसे निषेधात्मक भाव भी उदात्त की भावना से प्रेरित हो एक ऐसा रूप पा जाते हैं जिनकी परिणति आनंदमय ही है। भाव-भावना, इच्छा, संकल्प, सृजन आदि भी मन के ही व्यापार हैं। कला के क्षेत्र में तन-मन, पेशी-स्नायु संस्थान, रस ग्रंथि एवं मस्तिष्क और तंत्रिका-तंत्र के सभी भाग व इन सबके साथ अचेतन मन मिलकर और हमारे सारे बोधात्मक अनुभव मिलकर ही किसी रूप का सृजन करने में सहायक हो पाते हैं। फ्रॉयड के द्वारा बताए गए चेतन, अवचेतन, अचेतन मन की तीनों ही अवस्थाएं मन की विशिष्ट ऊर्जा के केंद्र हैं। ये तीनों ही कला-सृजन में ऊर्जा और आलोक देते हैं। इनसे हमारा प्रत्यक्ष, स्मृति, कल्पना, बिम्ब, प्रतीक प्रभावित होते हैं, न सिर्फ प्रभावित होते हैं वरन कला-सृजन इन्हीं के द्वारा निर्देशित होते हुए इस प्रकार स्वतः अभिव्यि होती जाती है कि कलाकार का भी उस पर नियंत्रण नही रहता। "मानसिक बिम्बों के प्रारम्भिक अवयवों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि वे दृष्टि, स्मृतियों, स्पर्श एवं गति से प्रप्त अनुभूति-जन्य सामग्री से रचित हैं।"[1] तन्त्रिका तन्त्र, रस ग्रन्थियों में भी मन है जो इनको प्रभावित करता है और इससे प्रभावित होता है।

मुख्य शब्द – कला, मनोविज्ञान, सम्बन्ध

Cite This Article: डॉ पूनम. (2019). "कला और मनोविज्ञान का सम्बन्ध." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 247-251. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592575.

मानव की प्रत्येक क्रिया चाहे वह समान्य हो अथवा कलात्मक उसका मनोवैज्ञानिक आधार अवश्य होता है। कलाकृति उन परिस्थितियों में मानव मस्तिष्क यथार्थ जगत से पलायन करता है और कल्पना जगत में विहार करने लगता है। "कल्पना मन की वह रचनात्मक क्रिया है, जिसके द्वारा कलाकार अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नवीन विचार-सृष्टि की संरचना करता है। कल्पना एक स्वतंत्र मानसिक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया कलात्मक प्रत्यक्ष ज्ञान तथा कलाकार की स्मृति के समान बाह्य कलात्मक पदार्थ सत्ता के अनुभव से आबद्ध नही रहती है।"[2] कला मनोवृत्तियों के सहारे आगे बढ़ती है और मनोवृत्तियाँ विषयी हो जाती हैं। अतः कला भी विषयगत हो जाती है इसलिए कला सुडौल आकारों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है।

भाव-पक्ष की अभिव्यक्ति कलाकार की प्रेरणा, मनोवृत्ति, भावना, इच्छा, परिस्थिति एवं सामाजिक दशा पर निर्भर करती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक खोजों के परिणाम-स्वरूप कलात्मक अभिव्यक्ति के अचेतन मन का विशेष महत्त्व रहता है। सभी कलात्मक अभिव्यक्तियों का उदगम स्थान अचेतन मन में है।

संवेग ही कला की कुंजी है, जो अचेतन मन प्रदेश से अचानक बुलबुलों के समान उठते हैं जैसे वे हमारे व्यगित को जो कि अचेतनावस्था में दमित है, स्थिर कर रहे हों। 'मेंकडुगल' के शब्दौँ में - "हमारा यह निर्णय उचित प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रकार के मूल प्रवृत्तिजन्य व्यवहार में एक ऐसी संवेगात्मक उत्तेजना होती है जो चाहे कितनी मन्द क्यों न हो, उस प्रकार के व्यवहार की प्रक्रिया का लक्षण होती है।"[3] कला इन्हीं सवेंगात्मक अनुभवों को लयात्मक आकारों में व्यवस्थित करती है। कलाकार की रचना उसके मस्तिष्क की रचना के अनुरूप होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कलाकृति में कलाकार अपने अचेतन मन से प्रभावित हो अपने संवेगो की ही अभिक्ति करता है इसलिए माना जाता है कि कला संवेगों का अभिव्यकिरण है।

अचेतन की तरंगें जो कलाकृति में रूपायित होती है, सदैव सार्वभौमिक प्रकृति की होती है। मानवीय भाव भी सभी प्राणियों में समान रूप से पाए जाते हैं इसलिए चित्रित भावों का आनन्द भी सार्वभौमिक है और इसी सार्वभौमिकता के कारण ही कलाकृतियाँ अपने उच्च-स्थान पर प्रतिष्ठित होती हैं। "भारतीय आधुनिक कलाकारो ने भी पारम्परिय दृश्य एवं ज्ञात जगत से प्रेरणा लेने के स्थान पर अपने अचेतन में जन्मी आत्मानुभूति के अनुरूप कला-सृजन किया है।"[4]

कला-सृजन के पीछे जिस मानसिक शि का शोधन होता है, वह प्रबृत्ति विभिन्न व्यगित इच्छाओं के दमन के पश्चात बनती है। यह मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ में कही जा सकती है कि समाज द्वारा तिरस्कृत व अग्रहित प्रवृत्तियाँ एवम इच्छाएँ चेतन मस्तिष्क द्वारा दमित किए जाने पर अचेतन मस्तिष्क में पलती है जहाँ से वे समय-समय पर प्रकाशन मार्ग खोजती हे किन्तु नैतिक प्रतिबन्धो के कारण अचेतन की दमित इच्छाएँ जिस रुप में दमित की गई थीं उसी रुप में अभिव्यि नहीं पा सकती, तब वह कला मे नाटकीकरण, प्रतीकीकरण, प्रक्षेपण, तादात्मीकरण इत्यादि विविध माध्यमों का प्रश्य लेकर एक भिन्न स्वरूप में प्रकट होती है। "कला-सृजन में बाह्य का स्थान कलाकार के मनोविज्ञान व अचेतन ने ले लिया है, इसी कारण कला दिन पर दिन गूढ़ होती जा रही है।"[5]

कला मानव मन की एक मौलिक, गम्भीर और सहज प्रबृत्ति है। "क्रोचे का कथन है कि कला सहज ज्ञान या अंतर्ज्ञान है श्रेष्ठ कला सहजानुभूति का संकलन करती है जो हमेशा संवेदनों या प्रभावो से सम्बद्ध होती है।"[6] यह सतही, ऊपरी, आकस्मिक सीखी हुई घटना नही है। मौलिक कलात्मक प्रव्रत्ति की जड़े कहीं हमारे तन-मन की बनावट में गहरी छिपी है।

"भारतीय चित्रकला में कलाकार वातावरण, विचार साम्य एवम विरोधी रंग धर्मो के संयोजन के लिए आबद्ध है। कलात्मक अनुभूति के जितने भी परिवेश उसकी मानसिक स्थिति अथवा सौन्दर्य बोध के लिए जितने प्रकारान्तरों से अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आते हैं, उतनी ही सशता उसकी कला में मार्जन एवम सुष्ठता उत्पन्न करती है।"[7]

कला मानव-मन की, मानवता की सहजात प्रव्रत्ति है इसलिए सनातन है और सामाजिक भी, समिष्ट और व्यष्टि है, सार्वभौमिक और सार्वकालिक भी। यह मानव के स्वभाव में है, जन्मजात प्रव्रत्ति और उसकी पहचान है। कला सबके लिए है। मन के समान कोई मौलिक सर्जक नही। कला मनोमय सृष्टि है अतैव मन, अतिमन

अचेतन है अर्थात मन का कला से सीधा सम्बन्ध है। "सृजन मनोविज्ञान की मान्यता है कि सर्जनों की क्रिया मुक्त और स्वतः स्फूर्त होती है।"[8]

मन का लोच, लय, संवेदनशीलता, ग्राह्यता, उल्लास-विलास, मु-क्रिया, अनायास और निर्बाध क्रिया, सृजन और आस्वादन के लिए आवश्यक शर्तें हैं। लय और लोच का नाम ही जीवन है जो स्वतः स्फूर्त एवम मुप्रतिभा के विधायक लक्षण हैं। "मनुष्य के ऐन्द्रिय अनुभव ने स्पष्ट किया कि कला वस्तु का जो तत्व मनुष्य की इन्द्रियों और अनुभूतियों को पहली दृष्टि में ही सीधे सुख और संतोष प्रदान करता है वह है उसका छन्द, उसका लय और उसका संतुलन, सामंजस्य और अनुपात, ध्वनि और मौन, रेखायें और रंग, गहराई और सतह, चेष्टाएँ और गतियाँ, प्रकाश और छाया, विराम और वेग आदि"।[9] ये सब मन में विश्वास के संकल्प का विस्तार, विकास और मन के कठोर यथार्थ की सीमाओं को लाँघने की क्षमता के कारण होता है। मन की यथार्थ में बांधे रखना, निश्चित ही शक्ति का क्षय करता है।

मनुष्य और उसके सृजन को समझने के लिए मन को समझना आवश्यक है। कला मनुष्य का एक श्रेष्ठ और शलाघ्य ही नहीं अपितु सहज और स्वाभाविक कृतित्व है, जिसके द्वारा वह अपने आपको, अपनी इच्छा, सुरुचि, मूल्य बोध, स्वप्न, कामना, कल्पना, उड़ान, स्फूर्ति, अनेक विधा मनोभाव एवम अनुभूतियों को रुपित करता है, इन्द्री-ग्राहय गठन में बाँधता है, अभिव्यक्ति देता है। "अविराम स्वतंत्र-साहचर्य के विस्तृत रूप उनमे परिकल्पना का स्वतंत्र प्रवाह, वास्तविक रूप ले लेता है।"[10] इस विचित्र रूपात्मक कृतित्व के विवेचन के लिए मनोविज्ञान की आवश्यकता स्पष्ट परिलक्षित होती है। मनोविज्ञान न तो कला का आधार है और न स्रोत अथवा साक्ष्य वरन कला नामक मानव के सृजन को समझने के लिए मात्र साधन है। कला में सृजन की प्रक्रिया, रसानुभूति और रसास्वादन, रूप, कल्पना, कला की समग्रता कला का क्रियात्मक पक्ष अथवा कृतित्व स्वरूप मनोनिर्माण, कला का पुनः आस्वादन, में सभी मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र हैं।

सृजन-मनोविज्ञान ने मन की मुस्थिति को सर्जक प्रतिभा के लिए प्राण तत्व माना है। सृजन में मन की शांति को न तो शून्यता माना है और न अनर्वर मनोदशा। इसके विपरीत शान्त मनोदशा की उर्वरकता, नवोन्मेष शालिनी चेतना की ऊर्जा सृजन के लिए अनिवार्य है। "फ्रेंच दार्शनिक बर्गसां और भारितां, इटालियन दार्शनिक क्रोचे और इसी प्रकार अस्तित्ववाद सम्प्रदाय के चिंतक सात्र कला का सृजन तथा रस ग्रहण का स्रोत मन की अन्तरानुभूति मानते हैं।"[11] इसी का नाम कलात्मक-सृजन का सुख है। यही स्थिति रसास्वादन और सौन्दर्यानुभूति की भी है। कला अपने रासायनिक चमत्कार से दुःख को चित्र की द्रवता-दीप्ती-विस्तार के द्वारा सुखात्मक अनुभूति में बदल देती है, काम की उत्तेजना को प्रेम और श्रंगार में, क्रोध को रौद्र में, उत्साह को वीर रस में। रस-निष्पत्ति का अर्थ भी यही है।

हम सुन्दर की अनुभूति को सौन्दर्य, मधुर की अनुभूति को माधुर्य और महान की अनुभूति को उदात्त कहते हैं। संस्कृति के आदि काल से ही सुन्दर, मधुर और उदात्त की सर्जना मानव ने प्रारम्भ की थी। "सृजन वायवी शून्य और अमूर्त नही अपितु सार्थक, मूर्त और भाव-विशेष का अभिव्यंजक होता है और मानवीय अनुभूति इसे साव उर्वर पीठिका प्रदान करती है।"[12] कला का सम्बंध चूंकि अनुभूति से है अतः अनुभावित = मन को नकारा नहीं जा सकता अर्थात मनोविज्ञान कला के क्षेत्र में उनके सृजन और उसकी अनुभूति दोनो के साथ जुड़ जाता है।

मनोविज्ञान कला के लिए आधार -स्रोत तो नहीं बन सकता परन्तु कला चिन्तन के क्षेत्र में कुछ उपयोगी तथ्यों को अवश्य उजागर करता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मन एवम मानसिक व्यापारों का क्रमिक वैज्ञानिक अध्ययन है। क्रोचे मानस-व्यापार में दो वृत्तियों का संयोग मानते हैं- 1. सैद्धात्तिक तथा 2. व्यवहारिक।

सैद्धान्तिक पक्ष का सम्बन्ध ज्ञान से है। ज्ञान भी दो प्रकार का होता है - प्रातिभ ज्ञान तथा प्रज्ञात्मक ज्ञान। इसी प्रकार व्यवहारिक क्रिया के भी दो भेद हैं - आर्थिक तथा नैतिक।

"मेकडुगल और सिगमण्ड फ्रॉयड दोनो ने ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में ऊर्जा की अवधारणा को स्थान दिया परन्तु उसने उसे मन्द प्राकृतिक प्रवृतियों के साथ रखकर रचनात्मक प्रवृत्ति नामाकरण किया। फ्रॉयड ने जहां एक ओर मन के विस्तार को चेतन, पूर्वचेतन, अवचेतन, अचेतन तक बढ़ाया वहीं दूसरी ओर मन की ऊर्जा को नाम भी दिया वह नाम था लिबिडो।"[13] फ्रॉयड की यह बहुत बड़ी देन थी। इसमें काम का व्यापक अर्थ ग्रहण किया गया है। इसके अंतर्गत 'आत्मरति' और विषयगत रति दोनो को स्वीकार किया गया है अर्थात 'लिबिडो' दो रूपों में मनुष्य में प्रवाहित होता है- एक तो वह स्वयं से प्रेम करता है और दूसरे अन्य व्यि के प्रति स्नेहसहोता है, किन्तु दोनों का उद्देश्य आनन्द और सुख की प्राप्ति है। चेतन हमारे मस्तिष्क के ऊपर का भाग है जिससे हमारा प्रत्यक्ष, स्मृति, कल्पना, विचार, निम्न भागों का नियंत्रण, संचालन, मूल्यांकन जैसे व्यापार चलते हैं। मस्तिष्क के निम्नतम प्रदेशों में तांत्रिक-तन्त्र और रस-ग्रन्थियों में भी मन है जो इनको प्रभावित करता है व इनसे प्रभावित होता है। मन के ये अनेक प्रदेश चेतन नही हैं वरन चेतन से जुड़े हैं। "जब अचेतन मन की कोई बात अथवा इच्छा आत्माभिव्यि के लिए प्रयत्नशील होती है तो वह उपचेतन अथवा अर्द्धचेतन में आकर रुकती है तथा वहाँ से सरलतापूर्वक उसे स्मरण करके चेतन में लाया जा सकता है।"[14] तंत्रिका-तंत्र सहित समूचा तन्त्र चेतन से अधिक अचेतन, समुचेमन का निर्माण करता है। रस ग्रन्थियाँ और पेशी स्नायु संस्थान इनमें महत्वपूर्ण है, जिनका भावनात्मक जीवन से गहरा संबंध है और हम जानते हैं कि कला भावना जीवन से जुडी है। सच तो यह है कि जिसे हम कलात्मक प्रभाव कहते हैं उसका सम्बन्ध वृहद् मस्तिष्क से नही है, जितना कि नीचे मस्तिष्क से है।

मिथक आधुनिक मनोविज्ञान द्वारा खोजी गई मन की एक मूल प्रवृति है जिसका नाम Mith+ Making = मिथीकरण है। कला-सृजन में मिथक का बहुत बड़ा योगदान है।

प्रतीक मन का व्यापार है। प्रतीक निर्माण की क्रिया को प्रतीकीकरण कहते हैं जो मन की गहराइयो और ऊचाइयों में होता है। "अभिव्यि तभी हो सकती है, जब कला के माध्यम शब्द, स्वर, रंग इत्यादि को अलग-अलग अर्थ देने वाले प्रतीक मान लिये जायें।"[15] मनुष्य की मूल्यग्राहिणी प्रवृत्ति उसे पशु से अलग करती है और यह आदिकाल से ही मूल्य, अर्थ महत्व को पैदा करता हुआ कला के इतिहास में निरन्तर दिखलायी पड़ रहा है और इसी प्रकिया में उसने प्रतीकों को जन्म दिया। बिम्ब कला के अंतर्गत महत्वपूर्ण तत्व है। इसका निर्माण कैसे होता है, वे कैसे-कहाँ से प्राप्त होते हैं ? इन महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान कला-मनोविज्ञान द्वारा ही सम्भव है। मन एक ऐसा यन्त्र है जो बाहर से पड़ने वाले प्रभावों को ग्रहण करता है। बाहर बिम्बों का संसार है, मन इनसे प्रतिबिम्ब पकड़ता है। "लॉक नामक दार्शनिक ने मन को कोरी स्लेट बताया।"[16]

मन यन्त्र है, चेतना उसका प्राण-तत्त्व है। कलात्मक कृति प्रतिबिम्ब है, प्रतिच्छाया है उस बिम्ब की जो सर्जक को अपने ही अन्तर्मन से प्रेरणा के द्वारा चेतना के उन्मेष के रूप मे प्राप्त होती है। तभी तो कलाकार के रूप बाह्य जगत की अनुकृति नही होते। चित्र के भावांकन में विभिन्न अवयव सहायक होते हैं।

कला का महत्वपूर्ण पक्ष उसका स्वान्तः सुखाय है जो कि हमे चित्रों में भी देखने को मिलता है। जब कलाकार अपने चारों ओर के वातावरण और समाज के साथ सुख-दुःख को इस प्रकार आत्मसात कर लेता है कि समाज का सुख-दुःख ही उसका सुख-दुःख बन जाता है, ऐसी स्थिति में उसके द्वारा सृजित कलाकृतियाँ स्वान्तः सुखाय की श्रेणी में आती है और उन कलाकृतियों को काल एवम परिस्थितियों की सीमाओं में नही बांधा जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

[1] कॉनरड फीडलर, ई. एच्. गॉम्बरिच द्वारा उद्घृत; "आर्ट् एण्ड इलूजन", पृष्ठ 16
[2] गौतम, आर बी; कला का मनोविज्ञान; पृष्ठ 107
[3] मेक्डूगल, विलियम; इन्ट्रडक्शन टू सोशल साइकलआजि, पृष्ठ 25-26
[4] भटनागर शैफाली; क्रीएटिविटी एण्ड कण्टम्प्रेरी आर्ट् इन् इण्डिया, पृष्ठ 53 (चित्रकला की पृष्ठभूमि में मनोविज्ञान);
[5] वही; पृष्ठ 53
[6] डॉ0 चतुर्वेदी, ममता; सौन्दर्य शास्त्र; पृष्ठ 102
[7] डॉ0 भट्ट, वासुदेव; कला के नियम तत्व; पृष्ठ 95
[8] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला-मनोविज्ञान; पृष्ठ 9
[9] राय, निहार रंजन; भारतीय कला का अध्ययन; पृष्ठ 63
[10] क्रिस्टोफर कार्डवेल; इलूजन एण्ड रिऐलिटी; पृष्ठ 182
[11] डॉ0 चतुर्वेदी, ममता; सौन्दर्य शास्त्र; पृष्ठ 24
[12] गौड़, आदर्श; क्रिएटिविटी एण्ड कण्टम्प्रेरी आर्ट् इन् इण्डिया (कला में सृजनात्मकता); पृष्ठ 65
[13] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला - मनोविज्ञान; पृष्ठ 26
[14] डॉ0 राय रामकुमार; असामान्य मनोविज्ञान; पृष्ठ 208
[15] शुक्ल, रामचन्द्र; कला का दर्शन; पृष्ठ 135
[16] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला- मनोविज्ञान; पृष्ठ 38